शिमला चण्ड़ीगढ़ धर्मप्रान्त

सिनोडल चर्चः एकात्मता, भागीदारी और सेवादारी/मिशन

प्रभु येसु ख्रीस्त में प्यारे भाईयों और बहनों,

संत पिता जी हर एक ख्रीस्तीय को आह्‌वाहन करते हैं कि, हम में से हर एक व्यक्ति, चाहे वह कलीसिया का अगुवा हो, या कलीसिया का एक आम सदस्य हो, एक दूसरे का हाथ पकड़ें और एकात्मता, भागीदारी और मिशन/सेवादारी में आगे बढ़े। इसलिए, हमें शिमला चण्ड़ीगढ़ धर्मप्रान्त के पुरोहितों, धर्मबहनों, धर्मसंघीय और विश्वासी जन को एक साथ आना है कि हम मनन चिंतन, विचार विमर्श करते हुए माता कलीसिया को अपना सहयोग दें।

ईश्वर की प्रजा होने का मतलब है बपतिस्मा प्राप्त लोग, जिन्हें आध्यात्मिकता का मंदिर बनने और पावन पुरोहिताई में सहभागी होने के लिए बुलाया गया है। द्वितीय वाटिकन महासभा इस बात को दुहराती है कि, कलीसिया जिसे ईश्वर ने चुना है, विश्वास के मामले में गलती नहीं कर सकती। यह बात कलीसिया में पारदर्शी है जहां धर्माध्यक्ष से लेकर एक साधारण विश्वासी भी विश्वास और नैतिकता जैसे विषय पर, सबका विचार एक जैसा ही पाया जाता है। इसलिए, प्रभु ने कलीसिया में नयापन को समझने और परखने का वरदान दिये हैं।

सिनोडल चर्च वह चर्च है, जहां हर एक को सुना जाता है। जब हम दूसरों को सुनते हैं तो हमें बहुत कुछ सिखने को मिलता है। वह चाहे आम विश्वासी हो, चाहे धर्माध्यक्ष लोग हों, चाहे संत पिता जी हों, सभी एक दूसरे को सुनते हैं और सभी सत्य की आत्मा पवित्र आत्मा की सुनते हैं, ताकि कलीसिया के लिए आत्मा के संदेश को जाना जा सके।

सिनड के प्रक्रिया की शुरूआत भी ईश्वर की प्रजा को सुनने के साथ होती है जो मसीह के पैगम्बर/भविष्यवक्ता होने के भागीदार हैं। और फिर यह प्रक्रिया पुरोहितों के माध्यम से जारी रहती है । सिनड के ज्ञाताओं के अनुसार विश्वास का संरक्षक, साक्ष्य और प्रचार की जिम्मेदारी धर्माध्यक्ष की है, और यह उनकी जिम्मेवारी है कि वे बदलती धाराओं को जाने और परखें। इसलिए सिनड की शुरूआत संत पिता जी से होती है जो कलीसिया के प्रमुख हैं लेकिन इसका आधार उनके अपने मत पर निर्भर नही है, बल्कि कलीसिया के विश्वास और साक्ष्य पर आधारीत है जिसका मूलभूत सुसमाचार और कलीसिया की परम्परा है।

संत जॉन क्रिसोस्टम कहते हैं कि चर्च और सिनड एक दर्पण जैसे हैं, क्योंकि चर्च का अर्थ ही है, विश्वासीयों का एक साथ मसीह मिलन के लिए आगे बढ़ना। इस यात्रा में ना कोई बड़ा है और ना ही कोई छोटा है। यहाँ तो हर एक व्यक्ति खुद को विनम्र बना दुसरों के लिए एक सेवादार बनता है।

तत्पश्चात, रोम में (सिनड) धर्मसभा यात्रा की शुरूआत 9 और 10 अक्टुबर 2021 को होगा और हमारे धर्मप्रान्त में सिनड यात्रा की शुरूआत 17 अक्टुबर 2021 को होगी और इसके साथ ही विभिन्न स्तरों और समय पर धर्मप्रान्त में अलग अलग समुहों के लिए सभाओं का आयोजन किया जायेगा। इसके लिए शिमला चण्ड़ीगढ़ धर्मप्रान्त ने दो पुरोहितों को नियुक्त किया है जो धर्मप्रान्त की तरफ से राष्ट्रीय संयोजक टीम के संपर्क में रहेंगे और साथ में धर्मप्रान्त ने एक कोर ग्रुप का भी गठन किया है जो धर्मप्रान्त में सिनड के प्रकिया का मार्गदर्शन करेंगे। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप निम्नलिखित तिथियों को चिह्नित कर लें:

17/10/2021	Inauguration of Diocesan Synodal Phase in the parishes/mission stations.
20/10/2021	Meeting for Priests, Brothers and Religious at the Pastoral Centre at 10am.
06/11/2021	Diocesan Pastoral Council Meeting at the Pastoral Centre at 10am.
19/11/2021	Meeting at the Deanery Level and the Deans will inform the same.

मैं सभी पुरोहितों, धर्मबहनों, धर्मसंघी और विश्वासी जन से अनुरोध करता हूँ कि आप इस में भाग लें, और एकत्मता से माता कलीसिया के साथ आगे बढ़ते रहें।

सिनड के पहले चरण की शुरूआत धर्मप्रान्त और पल्ली स्तर पर 17 अक्टुबर 2021 को होगी और इसके पूजन विधी का विवरण, हिन्दी और अंग्रेजी में आपको मिल जायेगा और साथ में पवित्र आत्मा से प्रार्थना का कार्ड हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी तीनों भाषाओं में आपको दिया जायेगा जिसे हर दिन मिस्सा बलिदान में परम प्रसाद ग्रहण करने के बाद बोलना है।

प्रभु सबको आशीष दे।

बिशप इग्नेशियस मास्करेन्हस
बिशप शिमला चण्ड़ीगढ़ धर्मप्रान्त